उत्तराखंड वानिकी प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी के प्रशिक्षु वन रेंज अधिकारियों का हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला का दौरा

वानिकी प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी (उत्तराखंड) के 38 (17 महिला तथा 21 पुरुष) प्रशिक्षु वन रेंज अधिकारियों नें अध्ययन भ्रमण के दौरान दिनांक 31.05.2017 को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला का दौरा किया।

संस्थान के उप-अरण्यपाल, श्री प्रदीप भारद्वाज ने प्रशिक्षु वन रेंज अधिकारियों तथा उनके साथ आये संकाय सदस्य का हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से संस्थान में पधारने पर हार्दिक स्वागत किया । श्री भारद्वाज ने अपने स्वागत भाषण में वर्तमान समय में वानिकी का महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत में वानिकी एक प्रमुख ग्रामीण आर्थिक क्रिया, ग्रामीण लोगों के जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू और एक ज्वलंत पर्यावरणीय और सामाजिक-राजनैतिक मुद्दा होने के साथ पर्यावरणीय प्रबंधन और धारणीय विकास हेतु अवसर उपलब्ध करने वाला क्षेत्र भी है । भारत विश्व के दस सर्वाधिक वन क्षेत्र वाले देशों में से एक है ।

आर्थिक योगदान के अतिरिक्त वन संसाधनों का महत्व इसलिए भी है कि ये हमें बहुत सी प्राकृतिक सुविधाएँ प्रदान करते हैं जिनका न तो हम आकलन करते हैं तथा उनके लिये हम कोई मूल्य भी नहीं चुकाते । श्री भारद्वाज ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि वे सभी सौभाग्यशाली है कि उन सब को इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिला है । वानिकी एक ऐसा रोचक अध्ययन क्षेत्र है जो उन सिद्धांतों तथा व्यवहारों से मिलकर बना है जिसमें वनों का सृजन, संरक्षण तथा वैज्ञानिक प्रबंधन और उनके संसाधनों का उपयोग शामिल है। अंत में श्री भरद्वाज ने सभी प्रशिक्षुओं को उनके कार्यक्षेत्र में ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा से कार्य करने को प्रेरित किया ।

डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-ई ने पॉवरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से प्रशिक्षुओं को संस्थान की उपलब्धियों, वर्तमान गतिविधियों तथा भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाई । डॉ. तपवाल ने बताया कि संस्थान वर्तमान में राष्ट्रीय उद्यान व वन्य जीव अभ्यारण्यों में पादप-विविधता का अध्ययन, देवदार,

चीड़, कैल, सैलिक्स प्रजातियों की बिमारियों, नश्वरता नियंत्रण के लिए कीट प्रबंधन रणनीति, हिमाचल प्रदेश के उच्च परिवर्तनशील क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए औषधीय पौध सरंक्षण क्षेत्रों तथा प्रेक्षण क्षेत्र की स्थापना, शंकुधारी (कोनिफर) तथा चौड़ी पत्ती (ब्रॉड-लीव्ड) वाले वृक्ष प्रजातियों, औषधीय पौधों तथा शुष्क मरुस्थल की स्थानीय प्रजातियों की बीज, पौधशाला तथा पौधरोपण की तकनीकों का विकास एवं मानकीकरण, की दिशा में अनुसंधान परियोजनाओं का संचलान कर रहा है । इसके अतिरिक्त संस्थान हिमाचल प्रदेश में स्थापित विभिन्न जलविद्युत व सिंचाई परियोजनाओं का पर्यावरण प्रभाव आकलन अध्ययन तथा पर्यावरण प्रबंधन योजना का प्रारूप, लोगों में पर्यावरण जागरूकता एवं शिक्षा को बढ़ावा देने के क्षेत्र में भी कार्य कर रहा है ।

इसके साथ संस्थान के वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षुओं द्वारा उठाये गए विभिन्न प्रश्नों नों के संतोषजनक उत्तर दिए तथा उनका मार्गदर्शन भी किया ।

-*-*-*-*-